<u>हिन्दी प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष, पत्र- 5</u>

<u>आदिकाल अथवा वीरगाथा काल की काव्य प्रवृत्तियां :-</u>

हिंदी साहित्य के इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिए चार वर्गों में विभक्त किया गया है | इनमें से प्रारंभिक काल को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने वीरगाथा काल नाम दिया है | आचार्य शुक्ल ने इस काल की समय सीमा 1050 विक्रम संवत से 1375 विक्रम संवत तक निर्धारित है | इस कालखंड को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल की संज्ञा दी है | इस काल की काव्य प्रवृत्तियां निम्नलिखित है :-

वीरगाथात्मकता - आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति वीरगाथात्मकता को ही माना है | इस काल के अनेक रासो काव्य एवं अन्य साहित्य अप्रमाणित हैं परंतु उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर वीरगाथा को आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति मानी जा सकती है | इस काल के काव्यों में युद्ध का सजीव वर्णन किया गया है जिसके कारण इन काव्यों में वीर रस की उत्पत्ति होती है | रासो काव्य का प्रधान रस वीररस ही है | कवि चंदबरदाई रचित पृथ्वीराज रासो वीरगाथा से परिपूर्ण काव्य है |

श्रृंगारिकता :- आदिकाल के कवि सामंत कवि थे | दरबारी परिवेश में रहने के कारण इन कवियों ने प्रमुखत: वीरगाथात्मक एवं श्रृंगारिक काव्यों का सृजन किया | इस काल के प्रमुख काव्य वीसलदेव रासो का प्रधान रस श्रृंगार हीं है | विद्यापति कृत 'विद्यापति पदावली'भी श्रृंगार रस पर ही केंद्रित है |

अप्रमाणिकता :- अधिकांश आदिकालीन साहित्य अप्रमाणिक हैं | रासो साहित्य के कुछ भाग ही ऐसे हैं जिसका प्रमाण उपलब्ध है |उपलब्ध साक्ष्यों में भी ऐतिहासिकता का अभाव है | इस काल के कवियों ने चरित्र नायक के रूप में तो ऐतिहासिक पात्रों को लिया है परंतु उनका वर्णन काल्पनिक मात्र है | इन कवियों ने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में जो कुछ लिखा है वह अतिश्योक्ति पूर्ण है | इन कवियों ने युद्ध वर्णन में अपनी कल्पना को ही अधिक अभिव्यक्ति दी है |

राष्ट्रीयता का अभाव :- आदिकालीन साहित्य में युद्ध का वर्णन तो बहुत हुआ है परंतु उनमें राष्ट्रीयता की भावना का अभाव है | इस समय देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था | सभी राजा आपस में लड़ते रहते थे, जिसका लाभ विदेशियों को मिलता था | कोई भी युद्ध राष्ट्रीयता की भावना से नहीं होते थे | राजागणअपने राज्य का विस्तार बढ़ाने या फिर शान बढ़ाने के लिए युद्ध की रचना करते थे और दरबारी कभी उनकी खुशामद में कविता करते थे |

आश्रयदाताओं की प्रशंसा :- आदिकालीन कवि मुख्यतः चारण थे | राज्याश्रित होने के कारण वे अपनी कविताओं के माध्यम से आश्रयदाता की प्रशंसा करते थे | उनकी प्रशंसा अतिश्योक्ति पूर्ण

हुआ करती थी | अपने आश्रयदाता की प्रशंसा के साथ ही दुश्मन राजा की हीनता का भी वर्णन उन कवियों ने मनोयोग से किया है | अपने आश्रय दाता की प्रशंसा करते हुए वे कभी उन्हें राम कृष्ण और अर्जुन आदि के समक्ष बदलाने में भी नहीं हिचकिचाते थे |

धार्मिकता :- आदिकाल का समय धार्मिक दृष्टि से अत्यंत असंतोष पूर्ण रहा | इस समय सभी धर्म में अपने मूल को त्याग कर विकृत हो चला था | इस समय तीन संप्रदाय प्रमुखता से उभर कर सामने आते हैं - सिद्ध संप्रदाय, नाथ संप्रदाय और जैन संप्रदाय | कालांतर में बौद्ध धर्म विकृत होकर व्रजयान बन गया था | इन व्रजयानियों को ही सिद्ध कहा गया | सिद्धों का प्रभाव अशिक्षित वर्ण पर सर्वाधिक था | यह धर्म का विकृत अवस्था था | सिद्धों ने जादू-टोना, चमत्कार आदि से लोगों को प्रभावित किया | बौद्धों और सिद्धों के प्रतिक्रिया स्वरूप नाथ संप्रदाय का उदय हुआ | नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक गोरखनाथ ने योग, संयम और सदाचार से ब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग बतलाया है | नाथों ने बाह्य आडंबरों, अंधविश्वासों एवं वर्ण- व्यवस्था आदि का विरोध किया | भारत के पश्चिम प्रदेश और विशेषकर गुजरात में जैन धर्म का बहुत अधिक प्रचार था |

भाषा :- आदिकालीन साहित्य की प्रमुख भाषा डिंगल एवं पिंगल है | अपभ्रंश और तत्कालीन राजस्थानी भाषा के मिलने से जिस भाषा का निर्माण हुआ उसे डिंगल कहा गया | उसी प्रकार अपभ्रंश और ब्रजभाषा के मेल से पिंगल भाषा बना | विद्यापति ने अपने पदों की रचना पिंगल के अलावे मैथिली में किया है | अमीर खुसरो की मुकरियां खड़ी बोली में रचित है |

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय ।

<u>हिन्दी प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष, पत्र- 6</u>

<u>काव्य लक्षण</u>

साहित्य जगत में काव्य का कोई एक लक्षण निहित नहीं है । संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य पर पर्याप्त विचार विमर्श हुआ है जिससे विभिन्न काव्य संप्रदायों का विकास हुआ फलस्वरूप काव्य के प्रमुख तत्वों की चर्चा करते हुए काव्य लक्षण निर्धारित करने का प्रयास किया गया है ।

कुछ प्रमुख काव्य-शास्त्रियों द्वारा निर्मित काव्य लक्षण निम्नलिखित हैं -

भामह(छठी शताब्दी) - शब्दार्थौ सहितौ काव्यम अर्थात शब्द और सहित भाव को काव्य कहते हैं।

आचार्य दंडी(7वीं शताब्दी) - शरीरंतावदिष्टार्थ व्यवच्छिना पदावली अथार्त ईस्ट अर्थ से युक्त पदावली तो उसका(काव्य का)शरीर मात्र है ।

आचार्य मम्मट(11वीं शताब्दी) -तददोषौ शब्दार्थऔ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि अर्थात दोषरहित, गुणसहित और यथासंभव अलंकारयुक्त शब्द तथा अर्थ को काव्य कहते हैं ।

आचार्य विश्वनाथ(14वीं शताब्दी) -वाक्यं रसात्मक काव्यं अर्थात रसात्मक वाक्य ही काव्य है ।

आचार्य जगन्नाथ(17वीं शताब्दी) -रामणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम अर्थात रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है ।

हिंदी आचार्यों द्वारा निर्मित काव्य लक्षण कुछ इस प्रकार हैं-

आचार्य रामचंद्र शुक्ल - जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है । हृदय की इस मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं ।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी - किसी प्रभावोत्पादक और मनोरंजक लेख, बात या वक्तृता का नाम कविता है ।

कुछ पाश्चात्य समीक्षकों द्वारा निर्दिष्ट काव्य लक्षण इस प्रकार हैं -

अरस्तू - poetry is an art. Art is imitation of mature.Epic poetry,tragedy and comedy in most of there forms are all in their Conception, modes of imitation.

वर्ड्सवर्थ - poetry is is the spontaneous overflow of powerfull feeling . it takes its origin from emotion recollected in tranquility.

मैथ्यू आर्नल्ड - poetry at bottom is the criticism of life.

कॉलरिज - poetry is the best word in the best order.

हडसन - poetry is the interpretation of life through imagination and emotion.

निष्कर्षतः इस आधार पर हम कह सकते हैं कि काव्य की सर्वमान्य परिभाषा दे पाना कठिन है क्योंकि कविता प्रत्येक काल में अपना रूप बदलती रहती है फिर भी काव्य के स्वरूप को स्पष्ट करने वाले कुछ लक्षण दिए जा सकते हैं,यथा-(क)मानवीय अनुभूति, (ख)भाषा द्वारा उसकी अभिव्यक्ति तथा (ग) अभिव्यकि में कलात्मकता ।

अतः इन लक्षणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि मानवीय अनुभूतियों द्वारा भाषा के माध्यम से की गई रसात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति ही कविता है ।

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय ।

हिन्दी प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष, पत्र- 7

भाषा विज्ञान

भाषा विज्ञान के लिए अंग्रेजी के शब्द 'Linguistic' प्रचलन में है | फिलोलॉजी (Philology) शब्द भी भाषा विज्ञान के लिए प्रयुक्त किया जाता है | वस्तुतः 'भाषा विज्ञान' भाषा और विज्ञान दो शब्दों को लेकर चला है | भाषा पर हम विचार कर चुके हैं और विज्ञान से तात्पर्य है उसका वैज्ञानिक विश्लेषण | इन्हीं कारणों से कई बार यह प्रश्न उठता है कि भाषा विज्ञान 'विज्ञान है अथवा कला' ? बहुत लोगों ने विज्ञान शब्द की जगह भाषाशास्त्र का प्रयोग किया है | भारतीय विद्वानों ने भाषा विज्ञान की अनेक परिभाषाएं दी है | साथ ही भाषा विज्ञान के आधुनिक रूप का विवेचन भी किया है | पाश्चात्य विद्वानों ने भी भाषा विज्ञान का सम्यक एवं विस्तार पूर्वक विवेचन किया |

ब्रिटेन के विश्व कोष के अनुसार-

"The word philology is the here taken as meaning the science language that is the study of structure and development of language this corresponding to linguistic."

अर्थात भाषा विज्ञान का अर्थ भाषा की संरचना और विकास के अध्ययन से है |

गिल्सन ने भाषा विज्ञान को परिभाषित करते हुए संक्षेप में कहा है-

Distripes linguistic is the discipline of study language in terms internal structure."

अर्थात भाषा की आंतरिक संरचना और विवेचनात्मक अध्ययन जिसके अंतर्गत आता है भाषा विज्ञान है |

भारतीय आचार्य में डॉ• श्यामसुंदर दास ने भाषा और विज्ञान को एक मानते हुए भाषा विज्ञान को इस प्रकार परिभाषित किया है-

"भाषा विज्ञान उस शास्त्र को कहते हैं जिसमें भाषा मात्र के विभिन्न अंगों एवं स्वरूप का विवेचन तथा निरूपण किया जाता है | "

इस परिभाषा के विवेचन से स्पष्ट है कि श्यामसुंदर दास ने भाषा विज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता पर बल दिया है |

डॉ• बाबूराम सक्सेना के अनुसार-

"भाषा विज्ञान का अभिप्राय भाषा का विश्लेषण करके उसका दिग्दर्शन करना है |"

डॉ•मंगल देव शास्त्री ने भाषा विज्ञान की अपेक्षाकृत अधिक विषय केंद्रित परिभाषा दिया है | उनके

अनुसार -

"भाषा विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं जिसमें सामान्यतः मानवीय भाषा का किसी विशेष भाषा की रचना और इतिहास का और अंततः भाषाओं, प्रादेशिक भाषाओं या बोलियों के वर्गों की पारस्परिक समानता और विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है |"

डॉ॰ भोलानाथ तिवारी ने भाषा विज्ञान की अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट परिभाषा प्रस्तुत किया है | उनके अनुसार - "जिस विज्ञान के अंतर्गत वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन के सहारे भाषा की उत्पत्ति, गठन, प्रकृति एवं विकास आदि का सम्यक व्याख्या करते हुए इन सभी के विषय में सिद्धांतों का निर्धारण हो, उसे भाषा विज्ञान कहते हैं |"

इस प्रकार भाषा विज्ञान में हम भाषा की संरचना, उसके स्वरूप, सिद्धांत, उत्पत्ति, प्रकृति, विकास आदि का अध्ययन करते हैं |

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय ।

हिन्दी प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष, पत्र- 8

प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप :

प्रयोजनमूलक भाषा की प्रकृति औपचारिक होती है। जबकि आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग अनौपचारिक संदर्भों में किया जाता है। औपचारिक संदर्भों में प्रयुक्त होने के कारण यहाँ वाक्य संरचनाएँ रूढ़ हो जाती हैं। बोलचाल की भाषा में जो सहजता और लचीलापन दिखाई देता है वह प्रयोजनमूलक भाषा में नहीं मिलता। उदाहरण के लिए आम बोलचाल की भाषा में वक्ता तथा श्रोता परस्पर संबोधन करते समय आम, तुम या तू सर्वनामों में से किसी भी सर्वनाम का प्रयोग करते हुए इस प्रकार के वाक्यो का पयोग कर सकते हैं।

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। इसके बोलने व समझने वालों की संख्या के अनुसार विश्व में यह तीसरे क्रम की भाषा है। यानी कि हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। अत: स्वाभाविक ही है कि विश्व की चुनिंदा भाषाओं में से एक महत्वपूर्ण भाषा और भारत की अभिज्ञात राष्ट्रभाषा होने के कारण, देश के प्रशासनिक कार्यो में हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो, राष्ट्रीयता की दृष्टि से ये आसार उपकारक ही है।राजभाषा के अतिरिक्त अन्य नये-नये व्यवहार क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार तथा प्रसार होता है, जैसे रेलवे प्लेटफार्म, मंदिर, धार्मिक संस्थानों आदि में। जीवन के कई प्रतिष्ठित क्षेत्रों में भी अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। विज्ञान और तकनीकी शिक्षा, कानून और न्यायालय, उच्चस्तरीय वाणिज्य और व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग होता है। व्यापारियों और व्यावसायियो के लिए भी हिन्दी का प्रयोग सुविधाजनक और आवश्यक बन गया है। भारतीय व्यापारी आज हिन्दी की उपेक्षा नहीं कर सकते, उनके कर्मचारी, ग्राहक सभी हिन्दी बोलते हैं।

प्रयोजनमूलक हिन्दी हिन्दी के भाषिक अध्ययन का ही एक और नाम है, एक और रूप है एक समय था जबकि सरकारी-अर्द्धसरकारी या सामान्यत: कार्यालयीन पत्राचार के लिए अंग्रेजी एक मात्र सक्षम भाषा समझी जाती थी। अंग्रेजी की उक्त महानता आज, सत्य से टूटी चेतना की तरह बेकार सिद्ध हो रही है चूंकि हिन्दी में अत्यन्त बढ़िया, स्तरीय तथा प्रभावक्षम पत्राचार संभव हुआ है। अत: जो लोग हिन्दी को अविकसित भाषा कहते थे, कभी खिचड़ी तो कभी क्लिष्ट भाषा कहते थे या अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी को नीचा दिखाने की मूर्खता करते थे उन्हें तक लगने लगा है कि हिन्दी वाकई संसार की एक महान भाषा है, हरेक दृष्टि से परिपूर्ण एक सम्पन्न भाषा है।

व्यवहार के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रयोजनों से हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। बैंक मे हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है तो सरकारी कार्यालयो में हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है। हिन्दी के इस स्वरूप को ही प्रयोजनमूलक हिन्दी कहते हैं।

प्रयोजनमूलक भाषा के प्रयोग-संदर्भ सुनिश्चित होते हैं। एक संदर्भ में प्रयुक्त होने वाली वाक्य

संरचनाओ का प्रयोग यदि कोई व्यक्ति भिन्न संदर्भ में या बोलचाल की भाषा में करता है तो उसकी

स्थिति हास्यास्पद हो सकती है। जैसे-आपको सूचित किया जाता है कि आप शीघ्र ही पूरे ऋण का भुगतान कर दें, आपको आदेश दिया जाता है कि आप समय से कार्यालय आया करें, यदि आपने आवेदन प्रस्तुत नहीं किया तो आपके विरूद्ध कार्रवाई की जाएगी। इस तरह के आदेशात्मक वाक्यों के प्रयोग 'प्रशासनिक या कार्यालयीन हिंदी' में देखने का खूब मिलते हैं। पंरतु यदि कोई व्यक्ति इसी तरह के आदेशात्मक वाक्यों का प्रयोग अपने घर में पत्नी के साथ करने लगे, जैसे-आपको सूचित किया जाता है कि रोज सुबह आठ बजे नाश्ता पेश किया करें तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस व्यक्ति की अपने घर में क्या दशा होगी।

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय ।